वार्तालाप–452, तामसपुरा (हरियाणा), दिनांक–25.11.07
Disc.CD No.452, dated 25.11.07 at Tamaspura, (Haryana)

समय – 0.02–6.30
जिज्ञासु – प्रश्न ये है कि एक भाई आर्य समाजी था। तो बाबा उसने एक लिट्रेचर में छपवाया, उस लिट्रेचर में – पहले वो बेसिक में काम किया उसके बाद उसने वो लिट्रेचर छोड़ करके ऐसा किया कि ब्रम्हाकुमारियों के लिये और दादा लेखराज के बारे में बातें ऐसी लिखी जो हमें उसमें अच्छी नहीं लगी। तो क्या ये सच था कि भई ये जो बातें ऐसी लिखी गई है जिसमें उनका अंदाज मेरी समझ में गलत था कि भई ये बात ठीक नहीं है। इन्होंने गलत लिखा। मैं आप से राय लेना चाहूं क्या ऐसे पहले कभी हुआ सन् 36 में या 40 में माउंट आबू के अंदर कराची में जिसके द्वारा ये बात मुख पे आई। वो किताब मेरे पास आ चुकी है।
Time: 0.02-6.30
Student: The question is that there was a brother who was Arya Samaji. So, Baba, he had a literature published. In that literature …. earlier he worked in basic (knowledge); later on he left from there and wrote such things about Brahmakumaris and Dada Lekhraj in the literature which I did not like. So, were the issues written by him true? According to my understanding his point of view was wrong. (I thought) it is not right, he has written wrong things. I want to take your opinion whether any such thing happened anytime in the year (19)36 or (19)40 at Mt. Abu or in Karachi due to which such things were spoken about. I have received (a copy of) that book.

बाबा– देखो ये तो हमें समझ में आ चुका है कि दुनियां में कितने धर्म फैले हुए है खास–खास। टोटल कितने है झाड़ में? हं? दस धर्म फैले हुए हैं। दस धर्मो में से 9 ऐसे है जो भगवान परमात्मा को मानने वाले हैं। एक नास्तिक धर्म ऐसा है जो भगवान को, आत्मा को, परमात्मा को, स्वर्ग को, नरक को नहीं मानता है, उसकी बात छोड़ दो। तो नौ धर्म वाले जो भगवान को मानते है, उनमें सबसे नीची कैटेगिरी का कौनसा है? आर्य समाजी। जो नीची कैटेगिरी का होगा वो ज्ञान सुनायेगा या ग्लानी सुनायेगा?
जिज्ञासु – ग्लानी सुनाएगा।
Baba: Look, we have understood how many main religions are spread in the world. How many religions are there in the tree in total? Hum? There are ten religions which have spread (in the world). Out of the ten religions, 9 are such that they believe in God, the Supreme Soul. The atheist *(naastik)* religion is such that it does not believe in God, in soul, in the Supreme Soul, in heaven, in hell. Leave it aside. So, among the people of nine religions who believe in God, which one is of the lowest category? Arya Samajis. Will the one which is of a lower category narrate knowledge or will he defame?
Student: He will defame.

बाबा – बेसिक में भी सारी दुनिया के हर धर्म से चुनी हुई अच्छी–अच्छी आत्मायें बेसिक में आ गयी; क्योंकि हिन्दु ही कन्वर्ट होकर दूसरे धर्म में गये थे। जो दूसरे धर्म में कन्वर्ट हो गये थे वो ही सब भगवान ने बच्चे चुनकर के फिर कहां उठा लिये? बेसिक में। अब उस बेसिक में नौ प्रकार के बच्चे मौजूद थे। सुर्यवंशी भी मौजूद थे, उंचे से उंचे। और नीच ते नीच आर्य समाजी भी मौजूद थे। तो बाहर की दुनियां के जो आर्य समाजी है वो उन ब्राह्मणों का ऑपोजिशन करेंगे या नहीं करेंगे? करेंगे। तो उन्होंने किया। बेसिक नॉलेज में भी आर्य समाजियों ने ही सबसे ज्यादा ऑपोजिशन किया। उन्होंने बहुत ग्लानि की। ऐसे ही बेसिक नॉलेज के अंदर सब धर्म की आत्मायें मौजूद थी। आदि में सूर्यवंशी भी थे। वो सूर्यवंशी आत्मायें पहले चली गयी। दुबारा जन्म लेकर आती हैं। और बाकी सब धर्म के मौजूद हैं अब बेसिक में।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: Even in the basic knowledge, nice souls selected from every religion in the entire world entered the basic knowledge because it is the Hindus themselves who had converted to other religions. The same children who converted to other religions were selected by God and placed at which place? In the basic (knowledge). Well, in that basic knowledge there were nine kinds of children. There were the highest *Suryavanshis* (those belonging to the Sun dynasty) also. And the lowest *Arya Samajis* were also there. So, will the *Arya Samajis* of the outside world oppose those Brahmins or not? They will. So, they did. Even in the basic knowledge it was the Arya Samajis who opposed more. They defamed a lot. Similarly, there were souls of all the religions within the basic knowledge. There were *Suryavanishis* in the beginning, too. Those *Suryavanshis* departed early. They take rebirth and come. And souls of the remaining religions are now present in the basic knowledge.

धीरे–धीरे दूसरे–दूसरे धर्म के जो बीज हैं वो सब एडवांस में आते जाते हैं। तो एड़वांस वालों का भी विरोध कौन करेंगें? आर्य समाजी ही कर सकते हैं। बाहर की दुनियां के आर्य समाजी ज्यादा विरोध करेंगे कि पहले ब्राह्मणों की दुनियां के अंदर के आर्य समाजी ज्यादा विरोध करेंगे? ब्राह्मणों की दुनियां के अंदर के आर्य समाजी। इसलिए इस यज्ञ के अंदर ज्यादा से ज्यादा लिट्रेचर छपानेवाले आर्य समाजी कौन थे? जगदीश भाई। जगदीश भाई ने एड़वांस पार्टी का जो भी ज्ञान निकला उसका सख्त ऑपोजिशन किया। और ऑपोजिशन करके सब ब्रह्माकुमारियों को ये ट्रेनिंग दे दी कि कैसे इनको ऑपोजिशन में लाया जायें। कैसे वितंडावाद फैलाया जाय कि ये ईश्वरीय ज्ञान नहीं हैं। ये तो मनमत का ज्ञान है। ये तो होता ही है।
Gradually, the seeds of other religions start coming in advance. So, who will oppose those belonging to the advance (party) as well? Only the Arya Samajis can do that. Will the Arya Samajis of the outside world oppose more or will the Arya Samajis within the world of Brahmins oppose more? The Arya Samajis within the world of Brahmins (will oppose more). This is why, who was the Arya Samaji to get the maximum literature published in the *yagya*? Jagdish *bhai*. Jagdish *bhai* strictly opposed whatever knowledge that emerged from the Advance Party. And while opposing it, he gave training to all the Brahmakumaris about how they (i.e. those belonging to the Advance Party) could be opposed. How to propagate the criticism (*vitandavaad*) that this is not Godly knowledge. This is the knowledge created through the opinion of someone's mind. This happens anyways.

बेसिक ब्राह्मणों का ऑपोजिशन किया दुनियां वाले आर्य समाजियों ने। और एड़वांस में जो ब्राह्मण हैं उनका ऑपोजिशन किया बेसिक वाले आर्य समाजियों ने। शायद पता नहीं होगा कि जगदीश भाई पहले आर्य समाजी पक्के थे। प्रायमरी स्कूल के हेडमास्टर थे। तो जो व्यक्ति अंतिम जन्म में आर्य समाजी था वो कौनसे धर्म का पक्का हुआ? आर्य समाज का ही हुआ। उनको ऑपोजिशन करना ही करना था। आर्य समाजियों का ऑपोजिशन सच्चाई के लिए बहुत पुराना हैं। और अभी भी जो आर्य समाजियों की औलादें हैं जिनको कहा जाता है कांग्रेस गवर्न्मेंट, जो किसी धर्म की अपेक्षा नहीं रखती, धर्म निरपरेक्ष शासन है जिनका; वो आगे चलके और सख्त ऑपोजिशन करेंगे क्योंकि उनके हाथ में सत्ता हैं। प्रभुता पाही, काही मद नाही; जिसके हाथ में प्रभुता आ जाती है, गद्दी आ जाती है, शक्ति आ जाती है, पैसे की भरमार आ जाती है फिर उसकी बुद्धि खराब हो जाती है। वो ये नहीं देखेंगे कि ईश्वरीय ताकत क्या होती है। वो अपनी ताकत के बल पर उछल–उछल के उल्टे काम करते रहते हैं।
The worldly AryaSamajis opposed the basic Brahmins (i.e. BKs). And the Aryasamajis within the basic (knowledge) opposed the Brahmins of the Advance (Party). Perhaps you don't know that Jagdish *bhai* was earlier a staunch Arya Samaji. He was a headmaster of a Primary School. So, to which religion does a person who was an Arya Samaji in his last birth, firmly belong to? He belongs to Arya Samaj only. He was bound to oppose. The opposition of truth by the Arya Samajis is a very old issue. In addition, even now the progeny of the Arya Samajis, which is

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

called the Congress Government, who do not have (special) consideration (*apeksha*) for any religion (*dharma*), whose rule is secular (*dharma nirpeksha*), will oppose even more strictly in future because the power is in their hands. '*Prabhuta paahi, kahi mad naahi'* (meaning) the one who attains sovereignty, (the one who) achieves the throne, (the one who) acquires power, (the one who) finds the treasure of wealth, his intellect spoils. They will not see, what is Godly power. They keep doing opposite things on the basis of their power.

समय – 6.32–8.23
जिज्ञासु – बाबा जो मुरली में बोला है, कि वो गांवडे का छोरा था, बकरियां चराते थे और अनाज बेचते थे, ये किसके बारे में बोला है, किसका जिक्र है ये?
बाबा– अनाज बेचते थे वो ब्रह्मा बाबा कि बात है और गांवडे का छोरा जो है वो ब्रह्मा बाबा नहीं थे। वो तो सिंध हैद्राबाद के थे।
जिज्ञासु– और बोला बकरियां चराते थे वो?
बाबा– हाँ, बकरी चराते थे, वो भी ब्रह्मा बाबा की बात थी। क्या शहरों में बकरी नहीं चराई जाती क्या? बचपन में भी बकरी चराई और वयोवृद्ध साठ साल के हो गये उसके बाद भी गैय्या पाली या बकरी चराई? कृष्ण के बाड़े में गैय्या दिखायी जाती है सुंदर–सुंदर या बकरी दिखायी जाती है? (सबने कहा – गैय्या।) अजमेर शरीफ में गैय्या होती है या बकरियां होती है? (सबने कहा – बकरियाँ।) अजमेर शरीफ में मन्दिर किसका है यादगार? (किसीने कहा– ब्रह्मा का।) क्यों? क्योंकि अजमेर है ही भेड़–बकरियों का देश। वहां मेला किसका लगता है, हिन्दुओं का या मुसलमानों का? मुसलमानों का बहुत बड़ा मेला लगता है, वो यादगार बनी हुई है। वहाँ बाहर से जानेवाले लोग ब्रह्मा की पूजा नहीं करते हैं। जो अंदर के रहनेवाले हैं, मन्दिर के अंदर, वही पुजारी पूजा करते हैं। बाकी कोई बाहर वाला ब्रह्मा को भगवान नहीं मानता। ऐसे ही माउंट आबू में है। ब्रह्मा को भगवान नहीं मान सकती दुनिया। जो अंदर रहनेवाले हैं वही ब्रह्मा को भगवान मानते रहे।

Time: 6.32-8.23
Student: Baba, it has been said in a *Murli* that he was a village lad, he used to take goats for grazing and used to sell foodgrains; about whom has this been mentioned?
Baba: As regards the person who used to sell food grains, it is about Brahma Baba and as regards the village lad, it was not Brahma Baba. He was from Sindh Hyderabad.
Student: And what about the issue, 'he used to take goats for grazing'?
Baba: Yes, he used to take goats for grazing; that was also about Brahma Baba. Don't people take goats for grazing in the cities? He took goats for grazing in his childhood as well as when he reached his old age, he became sixty years old, even after that did he reared cows or did he take goats for grazing? Are beautiful cows shown in the premises of Krishna or are goats depicted? (Everyone said – cows.) Are there cows or goats in *Ajmer Shaif* (a tourist center in Rajasthan famous for a Muslim Sufi shrine and Brahma's temple)? (Everyone said – goats). Whose temple exists in *Ajmer Sharif* as a memorial? (Someone said – Brahma's temple.) Why? It is because Ajmer is a country of sheep and goats. Whose fair is organized there, is it of Hindus or of Muslims? A very big fair of Muslims is organized there. That memorial is built there. People going there from outside do not worship Brahma. Those who live inside, within the temple, only those priests worship the idol. Otherwise, none of the outsiders consider Brahma to be God. Similar is the case with Mt.Abu. The world cannot accept Brahma as God. Only those who live inside have been accepting Brahma as God.

समय – 10.01
जिज्ञासु – बाबा वेदांती मम्मा भट्ठी करेगी? छोटी मम्मी आयेगी, तो भट्ठी करेगी?
बाबा– अब ज्ञान तो सबको लेना पड़े। गर्भ में तो सबको पकना पड़े, नहीं तो बाप का बच्चा कैसे बनेगा? अरे पहले जन्म की जो प्रजा होती है, उस प्रजा की भी कोई खास खासियत होगी

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

या नहीं होगी? जो और जन्मों की प्रजा में खासियत नहीं होगी वो खासियत पहले जन्म की प्रजा में होगी क्योंकि वो डायरेक्ट ज्ञान सूर्य के बच्चे हैं। चाहे वो बच्चियां हो, चाहे वो बच्चे हो; लेकिन ज्ञान में प्रजा भी बहुत तीखी होगी।

Time: 10.01

Student: Baba, will *Vedanti Mamma* do *bhatti*? Will *choti mummy* (the junior mother) do *bhatti* when she comes?

Baba: Well, everyone will have to obtain knowledge. Everyone will have to become mature in the womb; otherwise, how will he/she become the Father's child? Arey, will there be any specialty of the subjects of the first birth or not? The subjects of the first birth will have a specialty which will not be seen in the subjects of other births because they (subjects of the first birth) are the direct children of the Sun of knowledge. Whether they are daughters or sons, but the subjects will also be very sharp in knowledge.

समय– 12.52– 18.25

जिज्ञासु – बाबा ये कन्या कह रही थी कि बापदादा मतलब बापदादा मीठे–मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता बापदादा का..... जब परसों हम रेवाड़ी गये तो ये कन्या पूछ रही थी कि इसका हमें बताओ। हमने कहा बतायेंगे, नहीं तो बाबा आयेंगे तो बाबा से पूछेंगे।

बाबा– मुरली में जो बापदादा बोलते हैं, उसका कारण ये हैं कि बाप कहा जाता है शिव सुप्रिम सोल को। वो सिर्फ आत्माओं का बाप हैं। और वो आत्माओं का बाप सिर्फ बिंदु ही बनकर रहे तो किसी की समझ में नही आयेगा। वो सबको समझ में तब आता है भगवान बाप जब वो मनुष्य सृष्टि के पिता में प्रवेश करता है। तब सारी दुनियां जानती है कि ये भगवान बाप हैं। तो वो तो हुआ बाप का रूप। साकार रूप, निराकार साकार का मेल। बाप। मनुष्य सृष्टि का भी बाप और आत्माओं का भी बाप, एक ही रूप के अंदर।

Time: 12.52-18.25

Student: Baba, this sister was asking about the meaning of Bapdada, i.e. 'Mother and Father, Bapdada's....for sweet, long lost and now found children'.....day before yesterday, when we went to *Revadi* (a place in Haryana), this sister was asking me about its meaning. I said, I will tell you (the meaning); otherwise we will ask Baba when He comes here.

Baba: The reason for mentioning the word 'Bapdada' in the *Murlis* is, *Bap* refers to the Supreme Soul Shiv. He is just the Father of souls. And if that Father of souls remains just as a point, then nobody will be able to understand. Everybody understands God the Father when He enters in the father of the human world. Then the entire world comes to know this is God the Father. So, He is the form of the Father. The corporeal form; the combination of the incorporeal and the corporeal one, the father. The father of the human world and the Father of souls is in the same form.

फिर दादा; दादा लौकिक दुनियां में कहा जाता है बड़े भाई को। तो मनुष्य सृष्टि के जितने भी पत्ते हैं, कितने पत्ते हैं ? 500–700 करोड़। उन 500–700 करोड़ पत्तों में सबसे बड़ा पहला पत्ता कौन? कृष्ण की आत्मा। तो वो हो गया दादा। पहला हुआ बाप। निराकार साकार का मेल, वो बाप। और उसका जो पहला बच्चा हुआ सृष्टि में वो हुआ दादा। सारी सृष्टि का दादा। कितना बड़ा दादा? इतना बड़ा दादा कि भगवान बाप बनके बैठ जाता है, गीता का भगवान बनके बैठ जाता है।

Then *Dada*…; in the *lokik* world, the elder brother is called *Dada*. So, all the leaves of the human world; how many leaves are there? 500-700 crore (5-7 billion). Among those 500-700 crore leaves, who is the biggest, first leaf? The soul of Krishna. So, he happens to be *Dada*. First is the Father. The combination of the incorporeal and the corporeal is the Father. And his first child in the world is *Dada*. The *Dada* (elder brother) of the entire world. How big *Dada*? He is such a big *Dada* that he sits as God the Father; He sits as the God of the Gita.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

अब आयी बात कि अव्यक्त वाणी में जो कि गुल्जार दादी के द्वारा चलाई जाती है उसमें बाप दादा क्यों कहते हैं? दादा ही कहे या बाप ही कहे। तो उसका कारण यह है कि मुरली में बोला है कि, तुम बच्चे मुझे जितना याद करते हो उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ। क्या? कितना साथ हूँ? जितना तुम याद करते हो उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ। तो याद करने वाले बच्चों में सबसे जास्ति याद करने वाला बच्चा कौन सा है? कृष्ण बच्चा है। वो गुल्जार दादी में प्रवेश करता है, वो आत्मा, तो याद स्वरूप में दिखायी पड़ती है या नहीं? तो याद का चेहरा–मोहरा ही सारा बदल जाता है। तो जैसे कि बाप शिव उस कृष्ण बच्चे के साथ है, माना दादा के साथ है। बाकि ऐसे नहीं है कि शिव कोई ब्रह्मा में प्रवेश करता है। नहीं, ब्रह्मा की सोल याद में रहती हैं लगातार इसलिए बापदादा कहा जाता हैं। बाकि ऐसे नहीं है कि गुल्जार दादी में बाप शिव भी प्रवेश करता हैं। अगर बाप शिव प्रवेश करे तो जैसे शिव ब्रह्मा में प्रवेश करता था तो वो ब्रह्मा के मुख से जो वाणी शिव की निकलती थी वो ब्रह्मा बाबा सुनते थे कि नहीं? शिवबाबा, शिव जब ब्रह्मा में प्रवेश करते थे तो सबसे पहले कौन सुनता था? ब्रह्मा के कान सुनते थे। अब गुल्जार दादी में जब प्रवेश होता है तो गुल्जार दादी सुनती है क्या? नहीं सुनती। इससे क्या साबित होता है? कि परमात्मा की आत्मा शिव प्रवेश नहीं करता।

The next point is why is the word Bapdada used in the *Avyakta Vanis* narrated through Gulzar *Dadi*? Either the word '*Dada*' or the word '*Bap*' should be used. So, the reason for it is , it has been said in the *Murli* , the more you children remember Me, the more I am with you. What? To what extent am I with you? The more you remember Me, the more I am with you. So, among the children who remember (Me) which child remembers the most? It is the child Krishna. When he enters … when that soul (of Brahma) enters in Gulzar *Dadi*, does he appear to be the epitome of remembrance or not? So, the facial expressions change completely in remembrance. So, it is as if the Father Shiv is with that child Krishna, i.e. He is with *Dada*. But it is not that Shiv enters in Brahma. No, the soul of Brahma remains in remembrance continuously; this is why the word Bapdada is used. But it is not that Father Shiv also enters in Gulzar Dadi. If the Father Shiv enters, , just as when Shiv used to enter in Brahma, whatever versions of Shiv used to emerge from the mouth of Brahma, did Brahma Baba used to hear it or not? When Shivbaba, Shiv used to enter in Brahma, who used to listen first of all? Brahma's ears used to listen. Now when he (Brahma Baba) enters in Gulzar *Dadi*, does she listen? She doesn't. What does it prove? It proves that the Supreme Soul Shiv does not enter.

शिव परमात्मा की प्रवेशता में और मनुष्य आत्माओं की प्रवेशता में जमीन–आसमान का अंतर हैं। शिव परमात्मा, उसको सूक्ष्म शरीर का वजन ही नहीं है। स्थूल शरीर तो है ही नहीं। वो तो हल्का–फुल्का बिंदी हैं। कब आता है कब चला जाता है किसी को पता ही नहीं। ब्रह्मा के तन में आता था तो किसी को पता ही नहीं, ब्रह्मा को भी पता नहीं चलता। तो वो है परमात्मा की प्रवेशता और मनुष्य आत्मा जब प्रवेश करती है तो जिसमें प्रवेश करती है सूक्ष्म शरीर से उसका शरीर भारी हो जाता है और आत्मा गुम हो जाती है। तो गुल्जार दादी की आत्मा गुम हो जाती है। तो ब्रह्मा की ही सोल गुल्जार दादी में प्रवेश करती है। शिव की सोल प्रवेश नहीं करती बाकि बापदादा कहा इसलिए जाता है कि ब्रह्मा की आत्मा बाप को विशेष रूप से याद करती हैं।

There is a world of difference between the entry of the Supreme Soul Shiv (in a human being) and the entry of the human souls (in other human beings). The Supreme Soul Shiv does not carry the weight of the subtle body at all. He does not have a physical body at all. He is a weightless point. Nobody comes to know when He comes and when He departs. When He used to enter in Brahma's body, nobody, not even Brahma used to know of it. So, that is about the entry of the Supreme Soul and when a human soul enters, the body of the person in whom it enters with a subtle body, becomes heavy and the soul is subdued. So, the soul of Gulzar *Dadi* is

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

subdued. So, only the soul of Brahma enters in Gulzar *Dadi*. Shiv's soul does not enter. As regards the word Bapdada, it is used because Brahma's soul especially remembers the Father.

समय– 19.30–21.08
जिज्ञासु– बाबा मुरली में बोला है स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। तो स्वदर्शन चक्र कैसे फिरायें? जबकि अभी हमारे को 84 जन्मों का पता ही नहीं है।
बाबा– ओं, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, संगमयुग। स्वदर्शन चक्र हो गया। जिज्ञासु– ये तो बेसिक वाला हो गया बाबा।
बाबा– बेसिक वाला हो गया। अब एड़वांस के लिए पहले बाप को पहचानो। जब बाप का पक्का परिचय हो जायेगा तो अपने स्वरूप का भी परिचय होगा कि मैं सूर्यवंशी ग्रुप की आत्मा हूँ या चंद्रवंशी ग्रुप की आत्मा हूँ ?
जिज्ञासु – बाबा कब होयेगा यह?
बाबा– कब होयेगा? समझने वाले अभी भी समझ रहे हैं। (किसी ने कहा – बाप के सामने बैठे सुर्यवंशी हैं।) हां, पहले सूर्यवंशी प्रत्यक्ष होंगे या पहले चंद्रवंशी, इस्लाम वंशी, बौद्धी वंशी प्रत्यक्ष होंगे? पहले अपने स्वरूप को कौन पहचानेंगे? (सभी – सूर्यवंशी।) इसका मतलब तुम सूर्यवंशी नहीं हो क्या? अभी तक पूछ रहे हो। अरे, जो जिस ग्रुप का बच्चा होगा उसकी अपनी आत्मा में महसूसियत होनी चाहिए ना। क्या? कि मैं उस कुल का बच्चा हूँ। पूछने की क्या बात है? बाप मेरा सूर्य है सुर्यवंशी है, तो मैं बच्चा भी सूर्यवंशी हूँ। मेरे को कोई और भरमाय नहीं सकता कि मैं तेरा बाप हूँ। अगर भरमाय लेता है तो मै उसी वंश का हो गया।
Time: 19.30-21.08
Student: Baba, it has been said in *Murli*, we have to become *swadarshan chakradhari* (one who holds the discus of self- realization). So, how should we rotate the *swadarshan chakra* when we don't even know of our 84 births?
Baba: Oh! The Golden Age, the Silver Age, the Copper Age, the Iron Age, the Confluence Age. This is the *swadarshan chakra*.
Student: Baba, this is the basic one.
Baba: It is the basic one. Well, for the advance one, recognize the Father first. When you have the firm introduction of the Father, you will also have the introduction to your form, (you will know:) whether I am a soul of the *Suryavanshi* (of the Sun dynasty) group or of the *Chandravanshi* (of the Moon dynasty) group?
Student: Baba, when will this happen?
Baba: When will this happen? Those who are supposed to understand understand even now. (Someone said: those sitting in front of the Father are *Suryavanshis.*) Yes, will the *Suryavanshis* be revealed first or will the *Chandravanshis, Islamvanshis* (of the Islam dynasty), *Baudhivanshis* (of the Buddhist dynasty) be revealed first? Who will recognize their form first? (Everyone said – The *Suryavanshis.*) Does it mean you are not *Suryavanshis*? You are still asking. Arey, a child belonging to a particular group should have the realization in his soul, shouldn't he? What? That I am a child belonging to this clan. Is it anything to be asked? My father is Sun (*Surya*), *Suryavanshi*, so I, His child, am also a *Suryavanshi*. Nobody can mislead me (saying:) I am your Father. If someone misleads me, then I belong to that very dynasty.

समय– 53.45–56.06
जिज्ञासु– बाबा प्रजापिता और शंकर में क्या फरक है जी?
बाबा– शं...क...र। शंकर का मतलब मिक्स। राम की आत्मा भी है। कृष्ण की आत्मा भी है और शिव की आत्मा भी हैं; तीनों आत्माओं का संकरण, जैसे कहते हैं वर्ण संकर। वर्णसंकर का क्या अर्थ है? मां अलग जाति की और बाप अलग जाति का, तो कहते हैं वर्णसंकर औलाद। जैसे एंग्लोइंडियन। बाप हिन्दु और मां अंग्रेज, तो हो गयी एंग्लोइंडियन औलाद। ऐसे ही यहां है

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

शंकर। शंकर माने सिर्फ प्रजापिता नहीं। प्रजापिता भी है, प्रजामाता भी है और शिव भी है तो तीनों का संकरण हो गया।

Time: 53.45-56.06

Student: Baba, what is the difference between Prajapita and Shankar?

Baba: Shan…ka….r. Shankar means mix. There is the soul of Ram .There is also the soul of Krishna and there is the soul of Shiv as well; a mixture of all the three souls. For example it is said, *varna sankar* (hybrid class). What is the meaning of *varna sankar*? If the mother belongs to a different caste and the father belongs to a different caste; then the child (born to them) is called a crossbreed child. For example, the anglo-Indian. If the father is a Hindu and the mother is a Britisher, then the child (born) is an Anglo-Indian child. Similarly, here it is Shankar. Shankar does not mean just Prajapita. There is Prajapita as well as there is *Prajamata* (the mother of the world) and there is Shiv as well. So, it is a mixture of all the three of them.

जिज्ञासु– अभी बाबा को हम प्रजापिता समझे या शंकर समझे?

बाबा– जब जो आत्मा पार्ट बजाये उस कर्म के आधार पर उसको, पार्ट के आधार पर उसको नाम पड़ता हैं। शास्त्रो में जो भी नाम पड़े है, किस आधार पर पड़े हैं? काम के आधार पर नाम पड़े हैं। प्रजापिता का काम क्या है? प्रजापिता पतित है या पावन है? (किसी ने कहा – पावन है।) प्रजापिता पतित है। पतित सृष्टि जब तक रहेगी, प्रजापिता भी इस सृष्टि पर मौजूद रहेगा। और शंकर पतित है या पावन है? (किसी ने कहा– पावन है।) पावन क्यों है? क्योंकि मनन–चिंतन–मंथन के उंचे ते उंची स्टेज में रहता है। इसलिए वो पावन है, फरिश्ता है। फर्श की दुनियां वालों से उसका कोई उस समय रिश्ता नहीं, इसलिए वो शंकर है। और शिव एक बिंदी रूप, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी, बस। उसको कहेंगे शिव। शरीर एक ही है लेकिन पार्ट? पार्ट तीन है।

Student: Should we now consider Baba to be Prajapita or Shankar?

Baba: Whenever a soul plays whatever kind of part, it receives a name based on that action, based on that part. All the names that are mentioned in the scriptures are based on what? The names are based on the tasks performed. What is the task of Prajapita? Is Prajapita sinful or pure? (Someone said – He is pure.) Prajapita is sinful. Until the sinful world exists, Prajapita will also remain in this world. And is Shankar sinful or pure? (Someone said – Pure.) Why is he pure? It is because he remains in the highest stage of thinking and churning. That is why he is pure; he is an angel (*farishta*). He does not have any relationship (*rishta*) with the people of the world living on the floor (*farsh*) at that time. This is why he is Shankar. And Shiv is in the form of a point, incorporeal, viceless, egoless, that is all. He will be called Shiv. The body is the same, but what about the part? The parts are three.

समय–56.10–58.30

जिज्ञासु– बाबा बेसिक पार्टी और एड्वांस पार्टी दोनों में माताओं और कन्याओं की संख्या ज्यादा है और भाई कम हैं। भाई कम हैं तो ये अनबैलेन्स हो गया। ऐसा क्यों?

बाबा– तो आगे चलके बैलेन्स हो जायेगा। बाप आते है तो स्त्री को पुरूष और पुरूष को स्त्री बना देते है। ब्रह्मा पुरूष था कि स्त्री था? पुरूष था, क्या बना दिया? (किसीने कहा– स्त्री बना दिया।) और जगदम्बा स्त्री है कि पुरूष है? स्त्री चोला है; लेकिन वो रूद्रमाला का मणका है। भाव स्वभाव संस्कार से कंट्रोलिंग पावर ज्यादा है या कंट्रोल्ड होने की ताकत है? कंट्रोल करने की ताकत हैं। इसलिए ऐसा कुछ होगा कि अंत में जगदम्बा क्या बन जायेगी? राजा बनेगी या रानी बनेगी? राजा बन जायेगी। जैसे आज भी दुनियां में देखा जाता है बहुत से पुरूष स्त्री बन जाते हैं और बहुत–सी स्त्रियाँ पुरूष बन जाती हैं। हारमोन्स चेंज हो जाते हैं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 56.10-58.30
Student: Baba, in the basic party as well as the advance party, the number of mothers and virgins is more, and the brothers are less in number. Brothers are less. So, this is *unbalance*. Why is it so?
Baba: So, the balance will be achieved in the future. When the Father comes, He changes women into men and men into women. Was Brahma a male or female? He was a male. What did He make him into? (Someone said – He made him a female.) And is *Jagdamba* a female or a male? She has a female body, but she is a bead of the rosary of *Rudra (Rudramala)*. In terms of behavior, nature and *sanskars*, does she have more controlling power or does she have the power to be controlled (by others)? She has the power to control. This is why something will happen in the end so that,…. what will *Jagdamba* become? Will she become a king or a queen? She will become a king. For example, even today, it is seen in the world that many men become women and many women become men. The hormones change.

जिज्ञासु– लेकिन बाबा, जगदम्बा के लिए तो बोला है कि शरीर छोड़ना पड़ेगा।
बाबा– हाँ, तो क्या हुआ? सन् 36 के बाद सबको शरीर छोड़ना पड़ेगा, दूसरे–दूसरे धर्मवंश वालों को। चंद्रवंशी हो, इस्लाम वंशी हो, बौद्धी वंशी हो। जगदम्बा को कौनसे धर्म का बीज कहेंगे?
जिज्ञासु– ये तो मेल और फीमेल का संस्कार की बात है।
बाबा– नहीं, वंश कौनसा है? जगदम्बा का कौन सा वंश है? चंद्रवंश। तो चंद्रवंश वाले सूर्यवंशी तो नहीं है। शरीर छोड़ना पड़े। अगर राधा जैसे चंद्रवंशी हैं जो अपने अहम को झुका देते हैं.... ..(जिज्ञासु– नारी से लक्ष्मी।) हाँ, तो वो रहेंगे, बाकी सबको शरीर छोड़ना पड़ेगा।
Student: But Baba, it has been said for Jagdamba that she will have to leave the body.
Baba: Yes, so what? Everyone, i.e. those belonging to the other religious dynasties will have to leave the bodies. Whether they are the *Chandravanshis, Islamvanshis* or *Bauddhivanshis*. *Jagdamba* will be called a seed of which religion?
Student: It is about the male and female sanskars.
Baba: No, to which dynasty does she belong? To which dynasty does *Jagdamba* belong? *Chandravansh* (the moon dynasty). Those who belong to the Moon dynasty are not *Suryavanshis*. They will have to leave the body. If they are *Chandravanshis* like Radha, who surrender their ego….. (Student: from a woman to Lakshmi.) Yes, so, they will remain; all the remaining souls will have to leave their bodies.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info